12.2

अन्तरिक्ष और ब्रह्माभास,

क्षितिज और आकाश,

कागज और कैनवास

(अमृता प्रीतम और मेरी कविताएं)

डॉ. त्रिलोकीनाथ क्षत्रिय

सांतसा प्रकाशन

अन्तरिक्ष और ब्रह्माभास,

क्षितिज और आकाश,

कागज और कैनवास
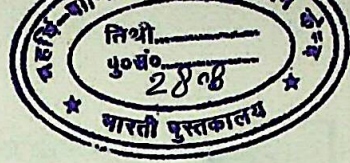
(अमृता प्रीतम और मेरी कविताएं)

लेखक

डॉ. त्रिलोकीनाथ क्षत्रिय

सम्पादक

ब्र.अरुणकुमार "आर्यवीर"

प्रकाशन तिथि : कार्तिक २०६२/नवम्बर २००५
प्रथमबार १००० प्रतियाँ, मूल्य : १० रुपए

सांतसा प्रकाशन

प्रसांत भवन, बी ५१२, सड़क ४, स्मृतिनगर,
भिलाई नगर, जि.दुर्ग, छत्तीसगढ़ ४९००२०
दूरभाष : (०७८८) २३९२८८४
E-mail : triloki_nathkshatriya@yahoo.co.in
Website : www.santasa.com

डॉ.त्रिलोकीनाथ क्षत्रिय "भापा"
पी.एच.डी.(वेद), एम.ए.(आठ विषय), सत्यार्थ शास्त्री,
बी.ई., एल.एल.बी., डी.एच.बी., पी.जी.डी.एच.ई.,
एम.आई.ई., आर.एम.पी. (१०७५२)
जन्म : ५ सितम्बर १९४०(३७) – गुजराँवाला पंजाब
(वर्तमान पाकिस्तान)

प्रणेता : (१) ससाहित्य : अ) सकविता : आप्ता, भजन, ब) सकहानी : वीर अभिमन्यु निश्चित्त: मरेगा, कल्पि, स) सनिवन्ध : मृत्यु, सांतसा पत्रिका में छपे निबन्ध तथा अन्य, द) ससूत्र साहित्य : गृहणी सफलता सूत्र, परीक्षा सफलता सूत्र, सफल जीवन साथी सूत्र तथा अन्य, ई) सचिन्तन : घेरों को घेर दो उन्मुक्त हो ही जाओगे, अगाओ की किताब बेकुबा, अतिआत्म साधना सतयुग सम्भव है तथा अन्य। **(२) सइंजीनियरिंग** : अ) सांतसा इंजीनियरिंग, १) संस्कार इंजीनियरिंग, २) सांतसा प्रवन्धन, ३) सइंजीनियरिंग व्यवहार प्रयोग भूतपूर्व मुख्य अभियन्ता (परियोजनाएं रूप में), एवं अन्य विधाएं। **(३) ससंस्था** : अ) प्रसांत संसद, ब) नव्य संसद, स) हवन संसद, द) आर्य संसद, ई) सुस्वाप संसद। फ) संस्कृति संसद। **(४) अमात्रा काव्य** : हव्य कव्य। **(५) प्रजतन्त्र। (६) सशिविर विधा** : अ) सखेल–कूद – करीब १५० केन्दों में ब) विभिन्न बाल संस्कार शिविर। **(७) सचिकित्सा** : १) अतिस्पर्शन, २) एकी, ३) मम न मम, ४) सर्व चिकित्सा। **(८) ससाधना** : अति आत्म साधना, एकी या पूर्ण साधना, अगाओ साधना, स्वयम्भू साधना, मोक्ष यहीं पे सुलभ है साधना तथा अन्य साधनाएँ। **(९) वेदविद् विधा (एप्लाईड वेद)। (१०) सम्मान** : १) वेदविद्वान सम्मान (मुम्बई), २) श्रमिक साहित्य सम्मान, ३) उत्कृष्ट बुजुर्ग सेवा सम्मान (बाल मंच स्मृति नगर), ४) गुरुजी सम्मान (साईस संस्थान) आदि। **(११) कुल प्रकाशित पुस्तकें** : करीब पैंतीस। **(१२) अन्तर्राष्ट्रीय सेमिनारों में आलेख पठन** चार। **राष्ट्रीय सेमिनारों में आलेख पठन बारह।**

माता : स्व.लाजवन्ती। **पिता** : स्व.लाला लद्धाराम सखूजा। **गुरु** : भूरी नाई (हरिद्वार)। **सुपत्नी** : सुदेश (स्वदेश)। **सुपुत्र** : १) नमित, २) निचित। **सुपुत्री** : शुचि।

पता : प्रसांत भवन, बी ५१२, सड़क ४, स्मृतिनगर, भिलाई, जि.दुर्ग, छत्तीसगढ़ ४९००२०
दूरभाष : (०७८८) २३९२८८४
E-mail : triloki_nathkshatriya@yahoo.com
Website : www.santasa.com

१

चुप दी साज़िश

कुत्ते शहरां दे,
अजकल नहीं भौंक दे,
चव्वी घण्टे,
वो नईं भौंक सकदे;
कि
शहरां विच्
सारे ही चोर हेन रहंदे।

२
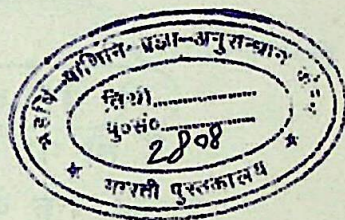
चुप की साज़िश

कुत्तों ने आज,
भौंकना बन्द कर दिया है,
कि हर पल हर क्षण,
कोई नहीं भौंक सकता;
हर कोई है चोर यहाँ।

३

ओ मेरे दोस्त! मेरे अज़नबी!

सुबह सवेरे,
सूरज घर मेरे
अज लैके आंदा हे।
शामी रोज ही
सूरज तां

क्षितिजा दे पार
डुब जांदा हे।
पर उस दा दित्ता अज,
रात्ती वी जिन्दा रहंदा ए।

४

ऐ मेरे दोस्त! मेरे अजनबी!

मैं तो मर गया,
उस वक्त के भागते ही।
यह तो वह खून है जमा हुआ
जो जिन्दा है मेरे रूप में।
मेरे डूबते जो
आकाश सारे में फैला है।

५

अश्वमेध यज्ञ

पहली बार,
हौले-हौले,
बहार दे कदमां नाल
आयी मुहब्बत।
वद्ध गई ओ,
सदायी जीवन यग,
मेरे कल हो गये अज
जीवन हुण वस,
हे हवन धूम दी महक।

६

अश्वमेध यज्ञ

इश्क का दिग्विजयी घोड़ा,
माता के नन्हे लव-कुश ने पकड़ा।
सीता त्यागी राम मेरा अस्तित्व,
सहजतः हार गया।............१०/७/२००१

७

एश ट्रे

हवन धूम से अगरबत्ती की राख तक,
इतिहास लम्बा सफर,
चिन्तन की रेखाएँ,
प्रजातन्त्र की सजाएँ,
एक आदमी कसके!
प्रजा का मजहब
आदमी से बड़ी दूर होता है
इत्ती देर में
आदमी कहाँ जा पहुँचता है।
प्रजातन्त्र में आदमी
हमेशा ही
कभी देश की
कभी प्रान्त की
कभी जनजाति की
बड़ी-बड़ी ऐश ट्रेओं में

बस राख की तरह झरता है !
तुम चाहो तो
ऐश ट्रेओं को
संसद, जनपथ, राष्ट्रपति भवनों सजाओ,
और प्रधानमन्त्रिया, मन्त्रिया, राष्ट्रपतिया, और सांसादी,
महा ऐश उडाओ।
या स्वतन्त्र-प्रजतन्त्र-मानवता जीकर
चाहो तो तोड़ डालो।।

८

रचना प्रक्रिया

ऋचा,
अव्यक्त को देखे,
स्व कोरे पन से,
उसकी निखालिसता का मिलान करे,
परिवीता-परिवीत,
नव्यनव्या-नव्यनव्य,
अप्रदुग्धा-अप्रदुग्ध,
अहसासे,
और क्रमशः सतत
उसके अतिझीन अतिमहीन,
हाथों से,
तन-मन-बुद्धि-धी तक,
पूरे वस्त्र उतारती चली जाए।
'ऋचा-अव्यक्त'

झीनतम मिलन होता है।
विश्व किलकारियाँ भरता है,
सुकँवारी का
गर्भाधान ऐसे ही होता है।......२/८/२००२

६
टोस्ट

सर्व शब्द एक जंगल है-
अनुगुणित तैंतीस शब्द उपवन हैं-
तैंतीस शब्द यह सुतन है-
तैंतीस एक शब्द सुमन है-
एक शब्द विज्ञन है-
एकान महान वितान है-
यहाँ तक शब्द सफर-
सिर्फ सिफर का सफर है
अशब्द में इसका समापन है।
शब्द क्षर है-
अतिशब्द नव सफर है-
अन्तर्शब्द सतत है-
अंगिशब्द रसन है-
स्व-शब्द अमृतन है-
आत्म शब्दन है।
आदि अव्यक्त गुंजन है।
शब्द ब्रह्म है।
लफ्ज खुदा है।
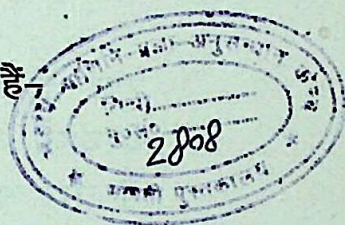
बड़ी झीनी लय है।
आत्मा स्तर की खुदी है।
स्व गति ही स्वर है।
लफ्जों से शराब सुराही खेल खेलना
दोख़जी गुनाह है।....................३/८/२००२

१०

कँवारी

रात तेरे कमरे घुसा,
दरवाजा बन्द हुआ,
मैं पूरा साबुत एक था।
तेरी सेज
सुहाग रात मनायी।
सुबह हुई,
दरवाजा खोल,
सूरज ने मुझे,
खुद को दिखाया।
या रब क्या हुआ ?
साबुत मैं
दो हो गया था।................२/८/२००२

११ अ

ज़राबकतर

नंगे समय के टुकड़े से,
जिन्दगी की नंगाई नहीं ढंकती।

(तन) कपड़े को कपड़ा पहनाने की
रस्मायी दुनियाँ
नंगाई पर रही हँसती।

ब

प्रजातन्त्री दोस्ती
अटल बिहारी वाजपेयी
और सोनिया की दोस्ती,
खुदा बचाए
ऐसी दोस्ती से,
कभी दुश्मनों को भी,
ऐसी दोस्ती न दे।..............२/८/२००२

१२

मेरा पता

आज अपने साथ जुड़ा,
पृथ्वी शब्द मिटा दिया है मैंने।
कि
ब्रह्माण्ड से कल
आज़ाद हो सकूँ यह मैं।............११/८/२००२

१३

स्टिल लाईफ

इतिहास दागदार दीवार है।
एनेक्सगोरस, ब्रूनो जला दो।
सुकरात को जेल दो, जहर दो।

स्पिनोजा से सात कदम दूर रहो।
गैलीलियो को सच मत कहने दो।
कांट को चेतावनी दो।
दयानन्द को बार-बार जहर दो।
इतिहास दागदार दीवार
मेरे सीने में दगी है जिन्दी है।
मैं प्रजातन्त्र की हत्या कर रहा हूँ।

१४

टं

अंडा पहले मुर्गी पहले ?
बीज बिना वृक्ष नहीं होता है।
बीज नष्ट नहीं होता है,
वह ही तो वृक्ष-बीज कर्म होता है।
आत्मबीज है मेरा,
तन तो वृक्ष विकास है।
मैं एक अनवरत प्रयास हूँ।................२/८/२००२

१५

मार्टिन लूथर किंग

तेरी बात जी ली है मैंने,
कि वो वेद की बात है।
हिरण्यगर्भा हूँ मैं
पवित्रता स्फुरित हूँ मैं।..........११/५/१९८४

१६

काज़ान ज़ाकिस

मैंने जिन्दगी से इश्क किया।
जिन्दगी ने मुझसे इश्क किया।
उम्र सारी सुहागरात में बीत गई।
सातवें आसमान पे,
मेरे सिवा,
कोई और खुदा ना था।.............११/५/१६८४

१७

ज्यां जैने

मैंने सारी देश-खाईयाँ नकार दीं,
कि वहाँ नकारात्मक कानूनी अन्धे बसते हैं।
पृथ्वी के बाशिंदे को,
सारे देशों ने मिलकर कैद किया।
मैं उनकी
बौनी बाहों पे हँस दिया।........५/२/१६८४

१८

इमरोज़ चित्रकार

मेरे सामने आकाश का कैनवास है,
नीला कैनवास,
ब्लैक-होलों, सूरजों, आकाशगंगाओं के
नन्हें-नन्हें परमाणु बिन्दुओं का बना।
गहरे रंगों के अवकाश

दिखते ही कहाँ हैं?
आदमी ब्लैक-होल न हो जाए खुद,
कोई उसे,
जन्नत के नर्क पेड़ का फल,
नहीं खिला सकता।
मिल्टन का पैरेडाईज लास्ट,
कविता का,
सबसे बड़ा,
व्हाईट झूठ है।

१९

सोभासिंह चित्रकार

ब्रह्म दे समुन्दर विच,
गूढ़ा गोता लाया,
हुंण मैंन पत्तां हि नहीं लगदा;
मैं ब्रह्म विच घुलदा।
ब्रह्म मेरे विच घुलदा।
मैं हां अनहदा।

२०

सोभासिंह चित्रकार

तम-महासागर जगत में मैंने
साधना-बाहों में थाम,
ज्ञान का जाल डाला
आनन्द मछलियाँ पकड़ने के लिए।

जाल में ब्रह्मानुभूति सूरज आ गया।
सशक्त सबल मैं,
मोक्ष उबर गया। ५/२/१९८४

२१

हैनरी मिलर

अज एक बीज वांग हे
करम दी धरती ते
इक कल दे खाद-पानी
दूजे कल दी हवा सुहानी
ऐ बीज
खुशियाँ समृद्धियाँ दा
वृक्ष हो जांदा है।
आनन्द दे पखेरुआं दा
सारा सोहणा बसेरा
हे अस्तित्व मेरा।

२२

हैनरी मिलर

वर्तमान एक हवाला के अण्डे के तरह है।
राजनीति के घोटालों की आंच पका,
भविष्य कुड़कती मुर्गी है प्रजातन्त्र।
इन अंडों को सेती
एक घंटा पहले कुड़कती।
एक घंटा बाद कुड़कती।

वाह री मुर्गी,
वाह रे उबले अण्डों,
तुम और-और-
घोटालों के चूजे हो जनते,
प्रजातन्त्री प्रजाननवाद
भूखी, बेकार, अशिक्षित, बेघर
जनता बनी जहाँ जननी
वह आकाओं-प्रजाननों के बलात्कार पिसी,
आखिर और क्या जनती ?

२३

अमृता प्रीतम

पराए दर्द दी,
मैंनु प्यास थी,
वो पाणी बंग पी लया;
मेरी धमनियाँ दे विच
ओ हो पाणी,
अमृत बन बहंदा है। ७/७/२००१

२४ अ

अमृता प्रीतम

एक हर्ष था,
हवन सुगन्ध सा सरेआम पिया
बहुत से भजन हैं,
धूम की तरह आसमान उमड़े।......३१/७/२०००

ब

मैं एक सिगरेट हूँ,
जो जल रही है,
दुनियाँ के मुंह लगी।
मेरी गजलें-कविताएँ,
वो राख हैं,
जो झडी हैं,
दुंनियाँ के हाथ झटके से। ८/३/१९८३

स

दुनियाँ एक सिगरेट है,
मैं पी रहा जिसे,
इससे झड़ी राख
वो चिन्तन है;
जो अवशेष है
दुनियाँ का।............................१५/३/१९८३

२५

इक दृष्टिकोण

सूरज नूं लख सलाम हेन
दुनियाँ दे हर बन्दे नूं
रोज सवेरे
दिन का पुत्तर देंदा है।
ए तां बन्दा हे जिन्दा,
पुत्तर नूं कतल करे,

छुट्टा छोड़ देवे,
या उस नाल मिलके,
सारे नरक पार कर लै।

२६

एक दृष्टिकोण

सूरज को लाख आदाब हैं।
हर इन्सान के लिए वह रात बीज से
दिन अंकुरित करता है।
उम्र का एक टुकड़ा
रोज होता है हरा।
इन्सान का हक बड़ा महान,
वह फगुनाए, सावनाए,
या पतझड़ हो जाए।

२७

आत्म मिलन

मैं हाज़र हां।
पूरा साबत।
मेरी उमर दी चाहत।
साबत + साबत = साबत,
आ न मेरी मोहब्बत। ६/४/१६८४

ब

तन साबत,
मन साबत,

आत्मा साबत।
टुकड़ा मुहब्बत,
टुकड़यां नूं मुबारक!..................१/६/१६८४

२८ अ

आत्म मिलन

तन तक आत्मा हूँ मैं,
प्रकृति शय्या सुकुमार।
तन और आत्मा है गर तू,
अपने देश लौट जा।
मैं अध्यात्म देश का वासी हूँ।...१०/३/१६८४

ब

आसमान कंबल तले,
सेज दोस्ती,
निभा सकेगी।
तो तू आ।
अव्यक्त पुकारता,
आ न अव्यक्ता।....................३१/७/१६८४

२६

विश्वास

श्रुति उषा दी वड्डी रौशनी,
सरस्वती सवार मोर बांग,
कूकदी-कूकदी मेरे घर आयी,
सारियाँ दीवारां खुल गइयां।

ग्यान दे बद्दल उमड़े,
मोर कितणां सोहणां नच्चे।
हिरण्यगर्भ दे लख-लख टुकड़े
ब्रह्म तेरा इश्क
सारेयां नूं जा लग्गे।

३०

विश्वास

ब्रह्म तेरा इश्क,
जो मुझे लगा है,
राजहंसों की तरह,
आसमानों उड़े।
दरारें, सुराख, सुरंग, भरे-
दीवार-दीवार गूंजे-
हर आदमी को जा लगे। ३१/७/२००२

३१

राजनीति

सच है- ब्रह्मनीति एक क्लासिक फिल्म है।
अभिनेता-अब जीता शाश्वत युजित है
अभिनेत्री-सिद्धि कुर्सी आनन्द देती है
एक्स्ट्रा-सदियों के सुविचारक सारे,
वित्तक-श्रम, तप, ऋत, शृत, ऋज
(स्व वित्त उगलते हैं),
संसद- प्रकृति चप्पा-चप्पा ऋता,
अखबार-शुभ ही शुभ आगार,

मैंने ये फिल्म देखी सुनी जी है।
प्रजातन्त्र चीखता रहा सदा-
नागरिक वर्जित।

३२

?

ब्रह्माण्ड एक ग्रन्थ विशाल,
आकाशगंगाओं की जिल्द वाला।
उफ रे ब्रह्म, वेद ज्ञान होने पर भी,
यह भूख, सहम, गुलामी, पीड़ा और दुःख,
यह न तेरी इबारत है;
न तेरी प्रूफ गलतियाँ।
यह तो,
बेईमानी, भ्रष्टाचार, अनियमों के ब्रशों से,
अज्ञान हाथों द्वारा,
आदमी निर्मित/अर्जित
मॉर्डन आर्ट का,
पैच वर्क है। ६/६/१९८४

३३

राज सत्ता

एक कारखाना सुलह का,
रोज चिमनियाँ,
स्थैर्य सन्तुलन का,
उत्पादन समृद्धि का,

उगलती स्वच्छ श्वेत बादल धुँआ।
प्रज सत्ता यहीं पनपती है।
लोग "आरोह सुखं रथम्",
कर्म का उछाह उफान हैं।
स्व-कार्यावस्था,
आनन्दी श्रमते-तपते,
सुरचना हैं करते।
ईश्वर सुखं रथम् की
ऊर्ध्व गति है। ३१/७/२०००

३४ अ

भाषण

आत्म-विचार में गठबन्धन होता है,
आदमी ही सुमंच होता है,
लफ्ज और सोच एक होती है;
राजनीति आत्महत्या कर लेती है।
जनता की मांगे,
कुमारिका बेटियों की
मांगे भर जाती हैं।
देश पूरा का पूरा,
सुमंगली, वधुरिमा हो जाता है।
वधुओं की गोदें,
दिव्य पवित्रता शिशुओं से,
हरी-भरी हो जाती हैं।...............४/७/२०००

३५

बस्ती

हम प्राणायाम, धूम, गाय, चन्दन, एन्जाइम-
ज्ञान समुन्दर, और आत्मकोष,
सब आव्हान करते हैं
बताते हैं तन बस्ती हमारी है।
साधनाओं ने रात,
सप्त मंजिले महल बनाए हैं।
प्रजातन्त्र की हत्या करो कि
वह अनआथोराईज्ड है। २१/७/२०००

३६

हैंगओवर

कुरान, बाईबिल, पुराण, गीता,
दर्शन, उपनिषद, ब्राह्मण, वेद।
इतिहास की कतरनें,
धुले बरतनों की तरह,
लगा दी हैं करीने से।
गले तक आल्हादतर हूँ,
सारी सत्ता आनन्द उमग है;
जैसे पूर्व कर्मों का,
सदविपाक आ उगा है,
दिव्य पूर्व अवशेष हैं।................३०/७/२०००

३७

जिन्दगी

सात कदम पूरे,
मर्यादा का सुखजा,
समकक्ष विवाह रिश्ता,
दो जनों का।
कि इन्सान,
सा रे ग म प जिए।
तब-अब और तब,
ब्रह्म हर पल ताजग।
ससाधना, ससब्र,
दो जून भोजन संरस।
कक्ष आहाते पार,
वेद झरन अपार,
हो उन्मुक्त स्नान,
आनन्द जल का पान।
रूह प्रयत्न उत्स,
दिव्य समयुग है।
उत्स बह निकले
जीवन मे भरें फसलें।
सच स्वप्न चादर
दो राही ओढ़ लें।
इस बन्धन की बात
हर कोई क्यों न करता ?

हर कोई क्यों न कहता ?
दुनियाँ तथ्य यथावत
एक ही सत्य की तरह
जीवन सफर उतराते;
अगर इन्सान
मुमुक्षुत्व पा जाते। ३०/७/२०००

३८

अक्षर

आदमी से बड़ी दूर,
होती है न प्रजा ?
एक प्रजा का नगर था।
बहुत देशों के पत्थर,
उस नगर रहते थे।
कुछ प्रजानन हो गए थे
पत्थरों के भी पत्थर।
और कहते हैं,
प्रजाननों का राज है।
ना प्रजाननों के कान
ना प्रजाननों को एहसास
वे प्रजा से बड़ी दूर थे।
आदमी दूर प्रजा,
प्रजा नगर संसार था–
सुरक्षा, संसद, हवाईजहाज,

बड़ी-बड़ी दीवारों घिरे
प्रजानन भी बड़ी दीवार थें।
प्रजा आदमी बीच
राजनीति काले जहर पानी की खाई थी।
क्षर का बड़ा मान था।
पल भर तेज रोशनी,
पल भर तेज आवाज।
परिवर्तन फटाखे थे,
प्रजानन खूब गाते थे।
सदायी बैसाख था।
प्रजानगर में
चिन्तन चिन्ता ग्रस्त था।
सर्वाधिक उदास था।
कोई न उसके पास था।
प्रजानगर में
एक प्रज पैदा हो गया।
दीवारें हिलने लगीं,
काले पानी का जहर उबलने लगा,
लकीरें पहाड़ फटी,
जलजला आ गया।
पत्थर हिलने लगे,
प्रजाननों के हुक्म,
संविधानों का शिकंजा,
पत्थरों का विश्व सम्मेलन,

पत्थर टकरा गए;
कुछ कोने टूट गिरे,
धूल हो गए।
पत्थर नगर,
पर्यावरण बचाओ
हरित घास कोंपल अंकुरी।
'प्रजातन्त्र'
प्रजा ऊँची दीवारों की,
तंग आहाता जेल।
एनेक्सगोरस, सुकरात,
ब्रूनो...., दयानन्द...., बलिदान
प्रजा बड़ा काला इतिहास।
तब अंश-प्रजातन्त्र था।
अब सर्वांगपूर्ण है।
उफ! आह!
गांधी ने प्रजातन्त्र को,
बांझ और वेश्या कहा।
इतिहास गवाह,
गांधी को,
बांझ वेश्या पुत्रों ने,
पत्थर देश शासक बना,
जीते जी तिल-तिल मारा।
प्रजा बड़ा काला इतिहास।
गोड़से भी

एक पत्थर भारत
की ही उपज था।
प्रजातन्त्र का नगर था।
बहुत देशों के पत्थर,
उस नगर रहते थे,
टी.व्ही., रेडियो, समाचार,
पत्थरी रागों के ही,
फिल्मी, दिल्लवी, खिल्ली
भौंपू गीत गाते थे।
प्रजानन सतत भरपेट
सतत पगुराते थे।
बचपन में स्टॅच्यू खेलता था,
ऊँगनी उठा,
जीवित को मूर्ति बना देता था।
उठी ऊँगलियाँ
जड़ पत्थर हो जाता था।
पत्थर-नगर विश्व,
अचानक स्टॅच्यू खेल है।
भारत की राजधानी,
राजधानी का हृतप्रदेश,
स्टॅच्यू मजारिस्तान है।
गांधी, राम, कृष्ण,
बुद्ध आदि को,
उफ प्रजाननों ने,

खेल ऊँगली दिखा,
स्टॅच्यू है कर दिया।
जीवन्त विचार वध का,
स्टॅच्यू सर्वोत्तम तरीका है।
लिंकन से लेनिन तक,
माओ से लूथर तक,
विश्व स्टॅच्यू स्थान है।
एक प्रजानगर है,
बहुत से पत्थर उसमें,
'देश' बन रहते हैं।
प्रजातन्त्र पत्थर नगर,
'आदमी' पैदा हो गया।
"प्रजातन्त्र की हत्या की दस्तावेज"
पत्थर नगर में मारी सेंध,
एक और एक ग्यारह,
अंधरे में उम्मीदे सुबह,
गांधी न हुआ,
सुकरात, ब्रूनो न हुआ,
न हुआ दयानन्द,
अप्रसिद्ध साधारण
'आदमी' ही रहा।
पत्थरों बीच,
टूटे किनारों बसी धूल,
'प्रज' बीज अंकुरे।

धूल नीचे माटी थी,
जड़ें फैली,
धीमी ताकत,
बड़ीं ताकत,
पत्थर तड़कने लगे हैं।
कुछ और दरारें,
कुछ और बीज,
क्षर नगर में,
परिवर्तन के,
फटाखों के,
राजनीति नगर में,
अक्षर के बीज उगे।
नहीं हैं क्षर अक्षर।
जीवित आँखों से
रमण अक्षर।
अक्षर प्रजा प्रज समन्वय है।
अक्षर-राज।
प्रज-तन्त्र।
स्व-तन्त्र। २/४/२०००

३९

मेरे आज का एक पात्र (लेनिन के नाम)

इतिहास कल होता है,
तू अनिमिषन्त।

निमिष–निमिष अन्त,
भी जिन्दा।
सदायी आज मिला मुझे,
अव यहाँ, अब वहाँ,
और अब ही कहाँ?
ब्रह्म सर्वव्यापकत्व,
जीवन में
उतर आता है जब,
सदायी आज मिला मुझे।
चलता नूर था तू,
श्रम और तप,
रोशनियाँ,
मुझे भी गयी बहला,
सदायी आज मिला मुझे।
इतिहास कल होता है।

४०

माता तृप्ता के नौ सपने

यह बेहद सच है,
मैं झीन महीन हूँ;
कि
एकान्त ओढ़ता हूँ।
मौत के पहले,
मौत के बाद तक फैली,

उजल चादर की तरह,
अन्तहीन सम वितान,
सलवटों की गुंजाईश ही नहीं,
पाक-साफ-झक चादर,
अव्यक्त की आभा,
सुन्दरतम है,
अमैथुनी सृष्टि जैसे,
परमात्मा की कोख से,
पहले-पहल अवतरती है।
अव्यक्त मेरी कलम से,
आसमानों उतरता है,
मुझ माँ को भर पता है,
पीड़ाहीन नहीं,
आनन्द भरा प्रसव।
गन्ध है ब्रह्म,
गन्धब्रह्म आभर,
मेरी नाक है।
रस है ब्रह्म,
रसब्रह्म आभर,
मेरी रसना है।
रूप है ब्रह्म,
रूपब्रह्म आभर,
मेरी आँख है।
स्पर्श है ब्रह्म,

स्पर्शब्रह्म आभर,
त्वक वितान है।
शब्द है ब्रह्म,
शब्दब्रह्म आभर,
मेरे कान हैं।
प्राण है ब्रह्म,
प्राणब्रह्म आभर,
मेरी सुषुम्ण है।
वाक् है ब्रह्म,
ब्रह्मवाक् आभर,
मेरी वाच् है।
सप्तेक है ब्रह्म,
सप्तेक ब्रह्म आभर
अस्तित्व वितान है।
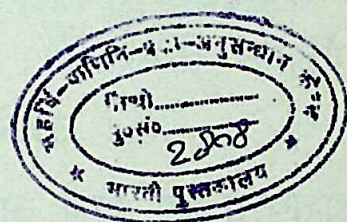
"लस्ट फॉर लाईफ" और "एटलस श्रग्ड" पढ़े बिना लेखक होना वैसे ही है जैसे पानी मथके मक्खन निकालना। मैं अमृता दी का आभारी रहूंगा कि उन्होंने पत्राचार के दौरान श्रेष्ठ पुस्तकों के नाम सुझाए, असहमत होते हुए भी जिनका मैं प्रशंसक हूं। अरुण तथा नमित का आभार जिन्होने अतिश्रम यह पुस्तिका तैयार की।

अन्तिम कविता

खुशवन्त का अर्थ अमृता होता है।
कभी सोचा भी न था,
करोड़पति नाम वाले,
कुटोरा ले,
भीख मांग रहे...
मैं भी धोखा खा गया था...
कच्ची उम्र भीख दे बैठा था...
भीख वापस नहीं ली जाती
मैं वापस चाहता हूँ...
हर रोज नए दर्द नहाता हूँ। २/४/२०००

डॉ.त्रिलोकीनाथ क्षत्रिय
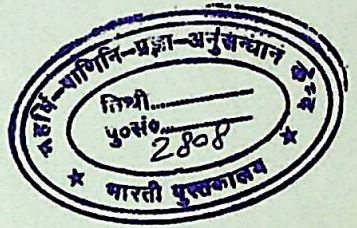
रचना प्रक्रिया

ऋचा,
अव्यक्त को देखे,
स्व कोरे पन से,
उसकी निखालिसता का मिलान करे,
परिवीता-परिवीत,
नव्यनव्या-नव्यनव्य,
अप्रदुग्धा-अप्रदुग्ध,
अहसासे,
और क्रमशः सतत
उसके अतिझीन अतिमहीन,
हाथों से,
तन-मन-बुद्धि-धी तक,
पूरे वस्त्र उतारती चली जाए।
'ऋचा-अव्यक्त'
झीनतम मिलन होता है।
विश्व किलकारियाँ भरता है,
सुकँवारी का
गर्भाधान ऐसे ही होता है।

सांतसा प्रकाशन

प्रसांत भवन, बी ५१२, सड़क ४, स्मृतिनगर,
भिलाई नगर, जि.दुर्ग, छत्तीसगढ़ ४९००२०
दूरभाष : (०७८८) २३९२८८४
E-mail : triloki_nathkshatriya@yahoo.co.in
Website : www.santasa.com